अंक 1

KARYASHALA FOUNDATION

शब्द समर्पण

हिंदी दिवस स्पेशल डिजिटल कलेक्शन

कार्यशाला फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित

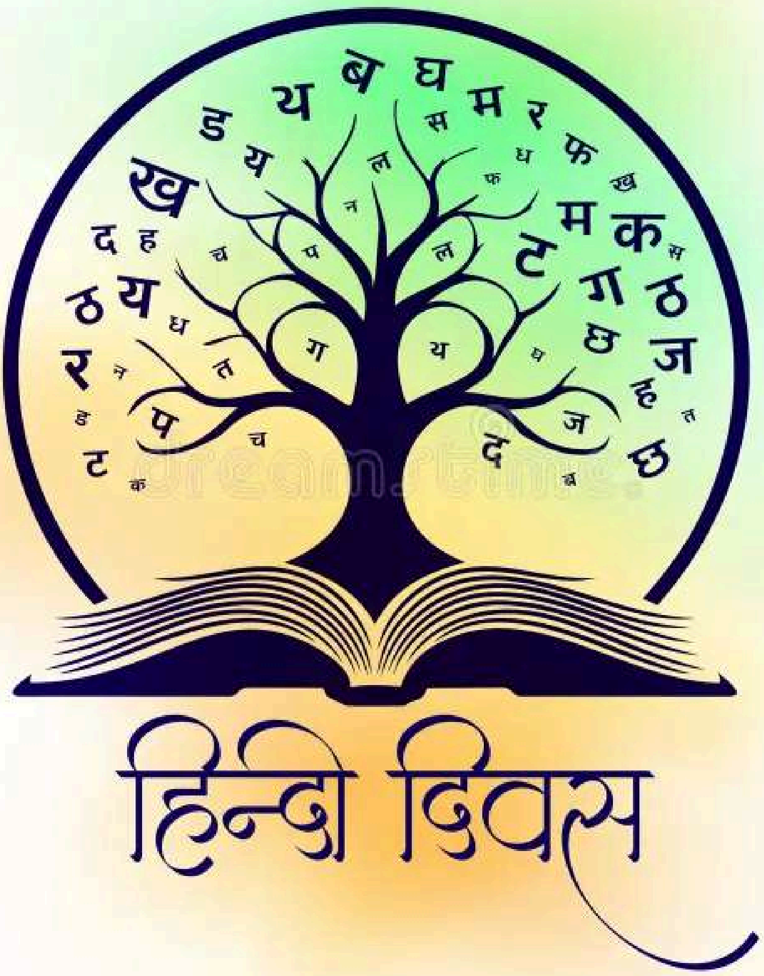

कॉपीराइट और प्रकाशन सूचना

© 2026 Karyashala Foundation. All rights reserved.
शब्द समर्पण एक डिजिटल साहित्यिक संग्रह है जिसे कार्यशाला फाउंडेशन ने संकलित और प्रकाशित किया है। व्यक्तिगत कविताएँ, कहानियाँ और अन्य साहित्यिक रचनाएँ उनके संबंधित योगदानकर्ताओं की बौद्धिक संपत्ति बनी रहती हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग कार्यशाला फाउंडेशन की पूर्व अनुमति के बिना पुनःप्रकाशित, पुनः वितरित, प्रस्तुत या स्वतंत्र रूप से संकलित किया गया रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

स्वीकृति

शब्द समर्पण हिंदी भाषा की खूबसूरती, गहराई और विविधता का एक नम्र उत्सव है। यह डिजिटल संग्रह उन कविताओं, कहानियों, चिंतन और अभिव्यक्तियों को एक साथ लाता है जो लोगों ने अपने विचार और रचनात्मकता हिंदी में साझा करने के लिए चुनी।

हम हर लेखक और सहयोगी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जो इस संग्रह का हिस्सा बने। आपके शब्दों, कल्पना और हिंदी के प्रति आपके प्यार ने शब्द समर्पण को उसका असली आत्मा और उद्देश्य दिया है।

हम उन सभी का भी आभार मानते हैं जिन्होंने प्रोत्साहित किया, समर्थन किया और एक ऐसा मंच बनाने में योगदान दिया जहां हिंदी को स्वतंत्र, रचनात्मक और पूरे मन से व्यक्त किया जा सके।

शब्द समर्पण - डिजिटल संग्रह को कार्यशाला फाउंडेशन द्वारा 14 सितंबर 2026 को हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशित किया गया है, ताकि हम एक ऐसी भाषा का जश्न मना सकें जो अपनी कहानियों, भावनाओं, विचारों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से पीढ़ियों को जोड़ती रहती है।

ये शब्द प्रेरित करते रहें, जोड़ते रहें और हमें हिंदी की समृद्धि की याद दिलाते रहें।

आभार के साथ,
कार्यशाला फाउंडेशन
हिंदी का जश्न। अभिव्यक्ति का जश्न। हर आवाज़ का जश्न।

खाली

स्वाति जैन

स्वाति जैन एक सोशल एंटरप्रेन्योर, कम्युनिटी बिल्डर और कार्यशाला फाउंडेशन और वीवुमेन की संस्थापक हैं। उनकी यात्रा इस मजबूत विश्वास से प्रेरित है कि प्लेटफॉर्म बनाकर लोगों को सीखने, जुड़ने, व्यक्त करने और आगे बढ़ने का अवसर दिया जा सकता है।

कार्यशाला फाउंडेशन के माध्यम से, स्वाति, शिक्षा, कौशल विकास, सामुदायिक कल्याण और जागरूकता के क्षेत्रों में सार्थक सामाजिक प्रभाव डालने के लिए काम कर रही हैं। उनका दृष्टिकोण अवसरों को कार्यवाही में बदलने, और लोगों और समुदायों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने पर आधारित है।

वीवुमेन के साथ उन्होंने एक सशक्त इकोसिस्टम बनाया है, जो १.२ लाख से अधिक महिलाओं को जोड़ता है, नेटवर्किंग, मेंटोरशिप, उद्यमिता, सीखने और सहयोग के लिए जगहें बनाता है। उनका काम महिलाओं को अपनी क्षमता खोजने, अपने अनुभव साझा करने और मिलकर मजबूत समुदाय बनाने के लिए प्रेरित करता रहता है।

स्वाति के काम का मूल उनका यह विश्वास है कि किसी भी कार्य को पूर्ण समर्पण से किया जाए तो आपके काम पर ध्यान केंद्रित ज़रूर होगा। वह मानती हैं कि हर व्यक्ति की एक कहानी है, हर विचार अभिव्यक्ति का हकदार है, और हर मंच जुड़ाव और परिवर्तन का उत्प्रेरक बन सकता है।

उनकी दृष्टि स्तर पर प्रभावशाली है: मंच तैयार करें, लोगों को एक साथ लाएं, और हर आवाज़ को सुने जाने का अवसर दें।

पूजा अग्रवाल

हिंदी भाषा में पिरोए गए शब्द,
निखारते हैं मन के उन भावों को,
जोड़ देते हैं दूसरों के विचारों से,
यह सुंदर, सरल हिंदी भाषा,
बहुत खूबसूरत माध्यम है,
कहने को अपने दिल की बात!

पूजा अग्रवाल एक सफल उद्यमी, कवयित्री, लेखिका और वीवुमन साहित्यिक सर्कल की डायरेक्टर है| स्कूल समय से ही पूजा हिंदी भाषा में गहरी रुचि रही है।

वह अपनी डायरी में कविताओं का सृजन करती रहती थीं और अपने भावों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करती थीं। वर्ष २०२२ से उन्होंने अलग-अलग साहित्यिक मंचों पर अपनी कविताएँ साझा करना शुरू किया। अब तक उनके दो काव्य संग्रह और पंद्रह साझा काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

पूजा का मानना है कि हिंदी भाषा बेहद खूबसूरत है, जिसके माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को सहजता से व्यक्त किया जा सकता है। हिंदी से जुड़े होने के कारण वह इस भाषा के माध्यम से अपने शब्दों और भावनाओं को लोगों के दिलों तक पहुँचाने में सक्षम होती हैं।

इसी सोच और भावना के साथ **"वीवुमेन" कम्युनिटी ग्रुप** ने एक खूबसूरत पहल की– **"वीवुमेन साहित्यिक सर्किल"**। इसका उद्देश्य एक ऐसा साहित्यिक मंच तैयार करना है, जहाँ हर पाठक को प्रेरणा मिले, हर लेखक का हौसला बढ़े और हर आवाज़ को अपनी बात कहने का अवसर मिले।

इस पहल की शुरुआत हर तीन महीने में आयोजित होने वाली साहित्यिक सभा "**शब्दों की बैठक**" से की गई। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ कविता, कहानियों, विचारों, संगीत और सार्थक बातचीत के माध्यम से साहित्य एवं रचनात्मकता का सुंदर आदान-प्रदान होता है।

इस पहल का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा इसका वार्षिक आयोजन "**रीडर्स एंड राइटर्स लिटरेचर फेस्टिवल**" है। इसका पहला लिटरेचर फेस्टिवल जुलाई में आयोजित किया गया, जिसमें कविता पाठ, पुस्तक विमोचन और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए साहित्य प्रेमियों एवं रचनाकारों को एक मंच पर लाया गया।

पूजा अग्रवाल को पूरी उम्मीद है कि "**वीवुमेन साहित्यिक सर्किल**" की यह पहल निरंतर लोगों को प्रेरित करती रहेगी, साहित्यिक समुदाय को मजबूत बनाएगी और अधिक से अधिक लोगों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा साझा करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

हिंदी दिवस के संदर्भ में वह मानती हैं कि १४ सितंबर १९४९ का दिन हिंदी भाषा के इतिहास में विशेष महत्व रखता है, जब संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। भारत में पहली बार हिंदी दिवस १४ सितंबर १९५३ को मनाया गया।

हिंदी दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और सम्मान की भावना को बढ़ाना है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी भावनाओं, संस्कृति और साहित्य की एक सशक्त अभिव्यक्ति भी है। इसलिए हमें अपनी राजभाषा हिंदी का सम्मान करना चाहिए और अपने दैनिक जीवन में इसके अधिक से अधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।

अनुषा जैन

अनुषा जैन, वीवुमेन की एडमिन और कार्यशाला फाउंडेशन के एक उत्साही स्वयंसेवक हैं जहाँ वह समुदाय निर्माण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक विकास और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर केंद्रित पहलों में सक्रिय रूप से योगदान देती हैं।

वीवुमेन समुदाय का हिस्सा होने के नाते, अनुषा विभिन्न लोगों के विचारों को एक साथ लाने और समुदाय द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यों और परियोजनाओं का समर्थन करने में शामिल रही हैं। रचनात्मकता, संचार और कंटेंट में उनकी रुचि ने उन्हें इस मैगज़ीन की संपादक की भूमिका निभाने के लिए भी प्रेरित किया।

अपनी संपादकीय भूमिका के माध्यम से, उन्होंने सामग्री को तैयार करने और प्रस्तुत करने का काम किया है जबकि हर योगदानकर्ता की व्यक्तिगतता और सार को बनाए रखा है। उनका मानना है कि हर कहानी, कविता, विचार और अभिव्यक्ति में एक अनोखी आवाज होती है—और साहित्य तब वास्तव में अर्थपूर्ण बनता है जब उन आवाजों को एक पाठक वर्ग मिलता है।

वीवुमेन और **कार्यशाला फाउंडेशन** के साथ उनका संबंध उन्हें उन कार्यों में योगदान देने का अवसर देता रहता है जो रचनात्मकता, समुदाय और सार्थक बदलाव का जश्न मनाती हैं।

इस संस्करण की संपादक के रूप में, अनुषा उन सभी योगदानकर्ताओं की आभारी हैं जिनके शब्दों, विचारों और रचनात्मकता ने इस पत्रिका को जीवित कराने में मदद की है।

वीवुमेन साहित्यिक सर्किल

वीवुमेन साहित्यिक सर्किल की स्थापना २०२५ में हुई थी, जब हमने अपनी समुदाय में लिखने, पढ़ने, सुनाने और प्रस्तुत करने वाले लोगों की बढ़ती संख्या को पहचाना। जो एक साधारण अवलोकन से शुरू हुआ, वह जल्दी ही लेखकों, कवियों, कहानीकारों और साहित्य के शौकीनों के लिए एक समर्पित स्थान बन गया, जहाँ वे एक साथ आकर लिखित और मौखिक शब्द का जश्न मना सकें।

स्वाति जैन के मार्गदर्शन और **पूजा अग्रवाल** के नेतृत्व में, साहित्यिक सर्किल का उद्देश्य एक समावेशी मंच बनाना है जहाँ रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जाए, आवाज़ें सुनी जाएँ और लोग साहित्य के अपने साझा प्रेम के माध्यम से जुड़ सकें।

सर्किल हर तिमाही में ऑफ़लाइन और ऑनलाइन साहित्यिक बैठकें आयोजित करती है, जिसमें सदस्य अपनी कविताएँ, कहानियाँ, विचार और प्रस्तुतियाँ साझा करते हैं। ये बैठकें केवल अपने काम को प्रस्तुत करने की नहीं होतीं, बल्कि सुनने, सीखने, नई आवाज़ों की खोज करने और महत्वपूर्ण संबंध बनाने का भी अवसर प्रदान करती हैं।

सर्किल के वार्षिक कैलेंडर की एक विशेष झलक 21 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व कविता दिवस है, जिसे हम हर साल एक समर्पित साहित्यिक सभा के साथ मनाते हैं। यह अवसर कविता और कवियों को एक साथ लाता है, और प्रतिभागियों को शब्दों की शाश्वत शक्ति को व्यक्त करने, प्रदर्शित करने और मनाने का अवसर प्रदान करता है।

एक साधारण विचार से एक बढ़ती साहित्यिक समुदाय तक, वीवुमेन साहित्यिक सर्किल ऐसे मंच बनाती रहती है जहाँ शब्द केवल लिखे नहीं जाते- साझा किए जाते हैं, सुने जाते हैं, महसूस किए जाते हैं और याद रखे जाते हैं।

पिछली मुलाकातें

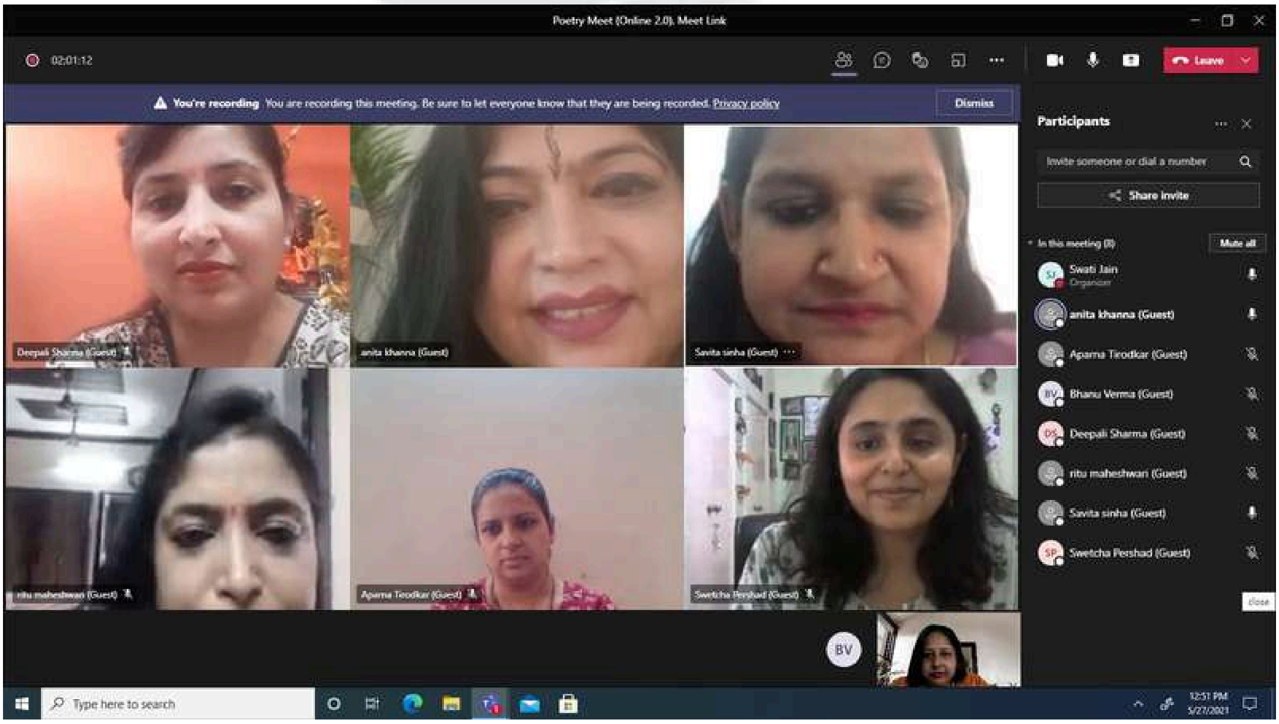
Poetry Meet (Online 2.0). Meet Link
02:01:12
Leave
You're recording You are recording this meeting. Be sure to let everyone know that they are being recorded. Privacy policy
Dismiss
Participants
Invite someone or dial a number
Share invite
In this meeting (8)
Mute all
Swati Jain
Organizer
anita khanna (Guest)
Aparna Tirodkar (Guest)
Bhanu Verma (Guest)
Deepali Sharma (Guest)
ritu maheshwari (Guest)
Savita sinha (Guest)
Swetcha Pershad (Guest)
Type here to search

रीडर्स एंड राइटर्स लिटरेचर फेस्टिवल

"रीडर्स एंड राइटर्स लिटरेरी फेस्टिवल" २०२६, जो २६ जुलाई २०२६ को गुरुग्राम में आयोजित हुआ, किताबों, कविताओं, क्रिएटिविटी और कनेक्शन का एक शानदार उत्सव था।

इस फेस्टिवल ने लेखकों, कवियों, स्पीकर्स, परफॉर्मर्स और साहित्य प्रेमियों को एक यादगार दिन के लिए एक साथ लाया। इसके मुख्य आकर्षण में बुक लॉन्च, कविता पाठ, स्पीकर सेशन, अनिल कुमार की स्टैंड-अप कॉमेडी, रिधव & आदित्य का संगीत और सिल्वर स्ट्रीक अस्पताल द्वारा आयोजित विशेष प्राथमिक चिकित्सा जागरूकता सत्र शामिल थे।

हमें प्रसन्नता हुई कि श्री वी. के. गुप्ता जी, मैनेजिंग डायरेक्टर, सिल्वर स्ट्रीक अस्पताल, हमारी मौजूदगी में शामिल हुए। लेखकों रमा सेठी, प्रियांका माथुर, सरिता जैन, बीना जयकृष्णन, विमल ग्रोवर और पूजा अग्रवाल ने अपनी किताबें लॉन्च कीं, जबकि कवियों नेहा पांडे, सान्या दुग्गल, रुचि मुखिजा, साक्षी और शिल्पा भटनागर ने अपने शब्दों को जीवंत किया।

हमारे वक्ताओं—रुपिंदर ओबेरॉय ढींगरा, सुदीप कौर कोहली, लिपिका नायर और कंचन असवानी—ने प्रेरक विचार और नजरिए साझा किए।

यह उत्सव हमारे वैन्यू पार्टनर सिल्वर स्ट्रीक हॉस्पिटल, मीडिया पार्टनर अनिल अरोड़ा (भरगोदया) - केतन एडवरटाइजिंग, फोटोग्राफर गगन ब्रार, वीडियोग्राफर साहिल, एंकर कवाल रेखी और वॉलंटियर्स रिदित, हर्षवर्धन और अनिका के प्रयासों से संभव हो पाया।

विशेष प्रशंसा आयोजन टीम—स्वाति जैन, डायरेक्टर, कार्यशाला फाउंडेशन; पूजा अग्रवाल; साक्षी; और सोनिया शर्मा—को जाती है, जिनकी समर्पण ने इस उत्सव को जीवित किया।

सिर्फ़ एक साहित्यिक कार्यक्रम नहीं, यह उत्सव लोगों, कहानियों, रचनात्मकता और समुदाय का जश्न था—ऐसी यादें बनाने वाला जो अंतिम पन्ना पलटने के बाद भी हमारे साथ रहेगा।

खाली

कविताएँ

खाली

एक नई शुरुआत

सरिता जैन

सागर की लहरों ने मुझसे पूछा
क्यों ख़ामोश हो गई हो तुम?
मैंने कहा, "ऐसा तो कुछ भी नहीं,
पर बोलूं तो क्या बोलूं अब?"

लहरें मुस्काईं, छूकर किनारा,
बोलीं, "तू पहले जैसी नहीं,
तेरी हंसी की गूंज कहाँ है?
वो बातों की बारिश अब नहीं।"

मैंने भी हल्की सांस भरी,
और देखा उनको मौन नज़रों से,
"शब्द बिखर गए हैं राहों में कहीं,
जैसे रेत उड़ती हो पवनों से।"

"कभी अरमानों की कश्ती थी,
जो सपनों के साहिल पर बहती थी,
अब बस खामोशी लहरों सी
आती है, जाती है, खो जाती है।"

सागर ने फिर मुझसे यह कहा,
"हर ज्वार के बाद भाटा भी है,
मत भूल कि सागर की गहराई में,
हर दर्द का मरहम भी है।"

मैंने लहरों को गले लगा लिया,
एक नई सुबह का वादा किया,
शब्दों को फिर से पंख मिले,
और खामोशी ने गीत गा लिया।

मै और तुम

सरिता जैन

मै और तुम
गर साथ साथ चलते
सफर कितना हसीन होता
मंज़िल कितने करीब होती ।
गीत तुम गुनगुनाते
बोल मै तुम को देती
कहानी कह जाते जीवन की
लिखी जो हमने साथ साथ थी।

मै और तुम
गर साथ साथ चलते
सफर कितना हसीन होता
मज़िल कितने करीब होती।
ख्वाब तुम सज़ाते जिंदगी के
सपनीली आंखे मेरी होती
बिखेरते उन लम्हो को
मेरे गीतो और सरगम मे

मै और तुम
गर साथ साथ चलते
सफर कितना हसीन होता
मंज़िल कितने करीब होती।
कदम मिलाकर जो हम चलते
मंज़िल भी करीब आती
कदम कभी नही डगमगाते
थाम ज़ो लेते एक दुजे को

मैं ओर तुम
गर साथ साथ चलते
सफर कितना हसीन होता
मंज़िल कितने करीब होती ।
ज़ीत अगर तुम जाते मुझसे
हारी हुई तब भी न थी
क्यूँ सांसे ये जुदा हुई
ज़ब दिल तुम थे धड़कन मैं थी

मैं और तुम
गर साथ साथ चलते
सफर कितना हसीन होता
मंज़िल कितने करीब होती।

माँ: अब बस एक याद

फूलों की महक में, चिड़ियों की चहक में,
हवा के झोकें में, दिन के शोर में,
रात की चुप्पी में,
माँ आप बहुत याद आयीं, माँ आप बहुत याद आयीं।

फ़ोन की गपशप से, दिल हल्का हो जाना,
सौ परेशानी भुला कर, मन के बात कह जाना,
फोन की घंटी बजने पर,
माँ आप बहुत याद आयीं, माँ आप बहुत याद आयीं।

अनू गुप्ता

ख़ुशी और गम में, हंसने और रोने में,
ज़िन्दगी की इस पड़ाव में, लॉकडाउन के भंवर में,
"जियो हर पल" का सबक देती हुई,
माँ आप बहुत याद आयीं, माँ आप बहुत याद आयीं।

कभी कभी लगे अकेलापन, यादों से मन भारी हो जाये
बीता समय आ जाये जो सामने ,आँखें हल्की सी नम हो जाये

मम्मी के घर जाऊंगी, कई दिनों से प्लानिंग चलती थी
क्या खाएगी पूछ बार बार,पसंदीदा व्यंजन बनाती थी

खाते पीते बाते करते, समय बीत जाता चुटकियां में
एक अजब सी बेफिक्री होती थी, निश्चिंत रहती विचारों में

दोनों मन की बात कर लेते, नए पुराने को याद कर लेते
कुछ आगे की तैयारी करते, थककर कुछ देर सो लेते

मैं बेफिक्र तो अब भी हूँ , पर मायके की बात अलग ही थी
एक अलग एहसास एक अलग सकून, मम्मी की रानी जो थी

अब जब नहीं रही तो, ढूँढती उनको अपने मन की आंखें मैं
माता का प्यार है अनूठा , बयान नहीं किया जा सकता शब्दों में

अखबार आखिर है क्या

थोड़ा निर्मम, थोड़ा निर्मोही, थोड़ा हितैषी, थोड़ा गद्दार है।
आम सी वस्तु पर खास है रूप, हाँ, यह एक अखबार है।

दुनिया भर की खबरें सारी समेटकर अंदर लाता है,
सुबह को चाय के चुस्की के संग
हर घर में खोला जाता है।

ताजा ताजा खबरों के संग
विज्ञापनों का भंडार है,
देश-विदेश की जानकारी के संग
समाहित इसमें समस्त संसार है।

नंदिनी कुमार

सन सोलह सौ पाँच ईसवी में इस अखबार को बनाया गया,
फिर सत्रह सौ अस्सी ईसवी में भारत में इसको लाया गया।

सन अठारह सौ छब्बीस ईसवी में हिंदी अखबार का जन्म हुआ,
धीरे-धीरे प्रचलन इसका समस्त जहाँ में उत्कर्ष हुआ।

उद्देश्य इसका था मात्र जानकारी सबको पहुँचाई जाए,
दीन दुनिया की खबरें सबको घर बैठे ही मिल जाएँ।

इस तरह फिर खबरों को बनाया गया मसालेदार,
जानकारी से हटकर फिर बन गया यह व्यापार।

सच क्या है और क्या है झूठ, इससे अंजान हर कोई दोष मढ़ता है।
आज के दौर में अखबार के नाम पर हर कोई बस ब्रेकिंग न्यूज़ पढ़ता है।

पर दस पन्नों की इस दुनिया की बस इतनी कहानी है,
आज की ताजा खबर कल फिर कल बस रद्दी बन जानी है।

पर किसी की रोजी-रोटी है तो किसी का यह संसार है,
यो तो छन्नी कागज़ का मात्र सात रुपए का यह अखबार है।

कलयुगी नेता

सुषमा सिंह

बस एक बार जीता दो मुझे। जीत का हार पहना दो मुझे।।

आपका क्षणिक समय मैं लूंगा, अपना कीमती वक्त आपको दूंगा।
कुछ बातों की शपथ लेकर मैं आया हूं,
आपकी सारी समस्याओं का समाधान मैं लाया हूं।
बस एक बार जीता दो मुझे। जीत का हार पहना दो मुझे ।।

सारी सड़के नई बनवाऊंगा, उसमें सीवर भी डलवाऊंगा,
दिन रात लाइट आएगी, सारी बस्तियां जगमगाएगी,
ट्रांसफार्मर गांव में ही रखवाऊंगा, सबको रोजगार में दिलाऊंगा,
गांव में कारोबार भी बढ़ाऊंगा, बस एक बार जीता दो मुझे ।
जीत का हार पहना दो मुझे ।।

सपने होंगे सबके पूरे, पड़े हुए थे जो अधूरे ,
नए हॉस्पिटल भी बनवाऊंगा, सबका मुफ्त इलाज भी करवाऊंगा ,
हर घर में एक गाड़ी होगी, उसमें पेट्रोल मुफ्त भरवाऊंगा,
बस एक बार जीता दो मुझे।
जीत का हार पहना दो मुझे।।

जाने कब से पड़े थे खंडर, जिनके ऊपर मचे बवंडर,
स्कूल कॉलेज ठीक करवाऊंगा, सबको उच्च शिक्षा भी दिलवाऊंगा,
हर मोहल्ला रोशन होगा, अब नहीं किसी का शोषण होगा,
मुफ्त में सबका राशन होगा, बस एक बार जीता दो मुझे।
जीत का हार पहना दो मुझे।।

गांव में सारी सुविधा होगी, दूर सभी की दुविधा होगी,
ना पानी की किल्लत होगी, सहनी ना फिर जिल्लत होगी,
गांव में ही जन्नत होगी, पूरी सब की मन्नत होगी,
नाली सारी पक्की होगी, हर घर में एक चक्की होगी,
शुद्ध देसी सब खाना खाना, सारे मिलकर मुझे जीताना।
सबकी इच्छा करुंगा पूरी, चाहे जितनी हो मजबूरी,
बस एक बार जीता दो मुझे। जीत का हार पहना दो मुझे।।

चुनाव जीतने के बादः- कौन हो तुम मैं नहीं जानता,
मैं तुमको नहीं पहचानता, समय नहीं अब पास है मेरे,
तंग करो ना शाम सवेरे।।

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता के दिन पर कुछ पंक्तियां:

आज स्वतंत्रता के पावन दिन पर
हम सभी भारतवासी शपथ लेते हैं।
आज के दिन हम
भारत की आज़ादी को
दिल से नमन करते हैं।

सलाम करते हैं
उन वीर जवानों की कुर्बानी को
हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई
सभी को याद करते हैं।
आज के दिन हम
भारत की आज़ादी को
दिल से नमन करते हैं।

तिरंगे को सम्मान करते हैं
भ्रष्टाचार मिटा कर रहेंगे
देश को फिर से
सोने की चिड़िया बनाएंगे।
आज के दिन हम
भारत की आज़ादी को
दिल से नमन करते हैं।

हर भारतीय की दृष्टि में
एकता की लहर दिखेगी।
आहान सुबह धरती पर बिखेर
सूरज संग रोशनी फैलायेगा।
इसी आशा के साथ
भारत की आज़ादी को
दिल से नमन करते हैं।
जय हिंद
जय भारत।

नेहा भाटिया

मैं और मेरे ईश्वर

बन्दना

ज़िन्दगी से कुछ पल चुरा के,
तुम्हे करीब से देखा मैंने,
संगीत के सुरों में सजा हुआ,
एक अद्भुत एहसास किया मैंने,
अकेली सुनसान खाली राहों में,
प्रकृति के स्पर्श में तुमको पाया मैंने,
मौसम की ठंडी हवाओं में,
बारिश की चंद फुहारों में,
भीड़ में लोगों के खिले हुए चेहरों में,
तुम्हारी आहट महसूस की मैंने,
कहाँ नहीं हो तुम, हर जगह दिखाई दिए,
फिर आईना जब देखा अपने आप में तुम दिखे,
हाथों से चेहरा ढका तो लगा तुमको छुआ मैंने,
ये वेहम है दुनिया का, की मैं और तुम अलग है,
कभी मुझमें तुमको, और कभी तुझमें खुद को पूजा मैंने,
देर से समझ आई बात, क्यूंकि नासमझ हूँ,
पर अगर नासमझ होने से इस तरह मिलते हो तुम,
तो बारंबार नासमझी का वादा किया मैंने
तुम मिल गए जिस रास्ते पर चलते हुए,
उस रास्ते को कभी न छोड़ने का फैसला किया मैंने,
अब कोई फर्क नहीं, मेरे इश्वर और मेरी इबादत में,
ज़िन्दगी इबादत और इबादत तुमसे मोहब्बत,
मोहब्बत को ज़िन्दगी बना के जिया मैंने,
बड़ी अनोखी है ये ज़िन्दगी मेरी
क्यूंकि तुमसे प्यार किया मैंने, क्यूंकि तुमसे प्यार किया मैंने।।

जिद्दी औरत

विमल ग्रोवर

हां मैं जिद्दी औरत हूं;
मेरी जिद्द ही मुझे यहां तक ले आई है |
जीवन का हीरक जयंती वर्ष है मेरा;
थकने लगे हैं घुटने ,
और पीठ शायद झुकने लगी है
सांस भी अब फूलने लगी है |
लेकिन मैं खुद से प्यार करती हूं,
मैं दर्पण में निहार लेती हूं
खुद को फिर निखार लेती हूं|
क्योंकि मैं जिद्दी औरत हूं|

कोई मेरी सुने न सुने
मैं खुद से बात कर लेती हूं
क्योंकि मैं जिद्दी औरत हूं |
बात करने की यही जिद मेरी ,
कलम तक पहुंची है;
जो मेरी बात लिखती है
मैं कलम से यहां तक पहुंची हूं
हां मैं जिद्दी औरत हूं|

सपने, इच्छाएं और आशाएं रखती हूं|
प्रतियोगिता के इस समाज में
पुरस्कार की कामना भी करती हूं|
भद्र समाज में अपनी पहचान की इच्छा रखती हूं
हां मैं जिद्दी औरत हूं|

मैं खुद से प्यार करती हूं
और सफलता के ताज को भी प्यार करती हूं
रखने को सर पर इस ताज को
तैयारी बेशुमार करती हूं
क्योंकि मैं जिद्दी औरत हूं|

रोल मॉडल कहलाऊंगी
मैं अगर इस ताज को पा जाऊंगी |
मेरी ख्वाहिशें ऊंचा आसमान हैं,
सितारों में टिमटिमाऊंगी ,
क्योंकि मैं एक जिद्दी औरत हूं,
हां ,मैं जिद्दी औरत हूं ।

अपनी प्रेरणा मैं स्वयं हूं
कितना चल आई हूं और कितना चलना है
यह सोचकर घबराती और थकती नहीं
पीछे छोड़ी पगडंडियों को देख उत्साहित होती हूं
शायद इसीलिए मैं चल पाती हूं ।
क्योंकि मैं एक जिद्दी औरत हूं,
हां ,मैं जिद्दी औरत हूं ।

पीढ़ी एक्स

स्वाति जैन

अब जाकर पता लगा,
हम हैं पीढ़ी एक्स!

जिसने बचपन में
माँ-बाप की डाँट सुनी,
और अब बच्चों की डाँट सुन रही है!

हमने माँ से पूछा,
"आज खाने में क्या बना है?"
जवाब मिलता था,
"जो बना है, वही खाना है!"

आज बच्चे पूछते हैं,
"आज खाने में क्या है?"
और फिर कहते हैं,
"ये मुझे पसंद नहीं!"

हमारे समय में घर में
एक ही दूरभाष होता था,
वो भी दीवार पर टंगा रहता था।

किसका फोन आया,
किससे बात हुई,
कितनी देर बात हुई,
सबका हिसाब पूरा घर जानता था!

आज बच्चों के हाथ में
पूरा संसार समाया है,
लेकिन माँ का फोन आते ही
कहते हैं,
“अभी व्यस्त हूँ, बाद में बात करता हूँ!”

हमने चिट्ठियाँ लिखीं,
डाकिए का इंतज़ार किया,
फिर तार देखा,
फिर दूरभाष आया,
फिर चलभाष आया।

अब बच्चे कहते हैं,
“माँ, संदेश क्यों नहीं भेजा?”

हमारे समय में
तस्वीर खिंचवाने से पहले
बाल ठीक करो,
कपड़े ठीक करो,
फिर एक तस्वीर!

और आज...
एक तस्वीर के लिए
पचास बार चेहरा बदलो,
फिर भी कहते हैं,
“मेरी अच्छी तस्वीर नहीं आई!”

हमने बिना गूगल के
रास्ते खोजे हैं,
बिना चलचित्र देखकर
चीज़ें ठीक की हैं,
बिना अंतरजाल के
पढ़ाई की है।

और आज बच्चे कहते हैं,
"माँ, इसका उत्तर तो अंतरजाल पर है!"

हमने बचत सीखी,
पुराने कपड़े छोटे भाई-बहनों को दिए,
पुरानी किताबें अगले साल चलती थीं।

आज बच्चे कहते हैं,
"ये तो पिछले साल का है,
मुझे नया चाहिए!"

हमने गर्मियों में
छत पर सोकर तारे गिने हैं,
बिजली चली जाए तो
हाथ का पंखा चलाया है।

आज बिजली पाँच मिनट चली जाए,
तो बच्चे ऐसे देखते हैं
जैसे पूरा संसार समाप्त हो गया हो!

हम वो पीढ़ी हैं
जिसने अभाव भी देखा,
जुगाड़ भी किया,
इंतज़ार भी किया,
और चीज़ों की कद्र भी सीखी।

माँ-बाप कहते थे,
"बच्चों को संभालो।"

अब बच्चे कहते हैं,
"माँ, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।"

और हम बीच में खड़े सोचते हैं,
"भाई, कोई हमारा भी ध्यान रख लो!"

हमने माँ-बाप की सुनी,
अब बच्चों की सुन रहे हैं।

पहले कहा जाता था,
"बड़ों की बात मानो।"

अब बच्चे कहते हैं,
"माँ, समय बदल गया है!"

हाँ भाई,
समय तो बदल गया,
लेकिन हमारी जिम्मेदारियाँ
आज भी वैसी ही हैं!

हम सच में अनोखी पीढ़ी हैं।

न पूरी तरह पुराने,
न पूरी तरह नए।

हम वो पीढ़ी हैं
जिसने लालटेन भी देखी,
और आज हजारों रुपये का
बिजली का बिल भी देखा!

जिसने पैदल चलना भी सीखा,
साइकिल भी चलाई,
स्कूटर भी चलाया,
और अब बच्चों से सुन रहे हैं,
"माँ, गाड़ी मैं चलाऊँ?"

और सबसे बड़ा सच...

हमने माँ-बाप की डाँट सुनी,
बच्चों की शिकायतें सुनीं,
पति की बातें सुनीं,
समाज की बातें सुनीं...

अब लगता है,
कभी-कभी अपनी भी सुन लिया करें!

अब जाकर समझ आया...

हम पीढ़ी एक्स नहीं हैं,

हम वो पीढ़ी हैं
जो सबकी सुनती है,
सबको समझती है,
सबको संभालती है...

और रात को चुपचाप सोचती है,
“आखिर मेरी सुनता कौन है?”

जीवन, समाज, संस्कृति, मूल्यों पर विचार

खाली

हिंदी सिर्फ़ हिंदी दिवस के लिए क्यों?

हमारे समाज में एक अजीब-सी सोच दिखाई देती है। अगर कोई व्यक्ति अंग्रेज़ी बोलते हुए कोई गलती कर दे, तो लोग तुरंत हँसने लगते हैं। उसका मज़ाक बनाया जाता है, उसकी अंग्रेज़ी पर टिप्पणी की जाती है। लेकिन अगर वही व्यक्ति हिंदी बोलते हुए गलत शब्द या गलत वाक्य बोल दे, तो हम उसे उतनी गंभीरता से नहीं लेते। सवाल यह है कि ऐसा क्यों?

अंग्रेज़ी सीखना अच्छी बात है। आज के समय में अंग्रेज़ी शिक्षा, नौकरी और दुनिया से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। लेकिन क्या अंग्रेज़ी जानना ही समझदार या पढ़ा-लिखा होने की निशानी है? क्या अपनी भाषा में थोड़ी गलती करना शर्म की बात है?

हम अक्सर अपने बच्चों की पढ़ाई की शुरुआत ABCD और अंग्रेज़ी कविताएँ से करते हैं। यह भी ज़रूरी है, लेकिन क्या हमने कभी उतने ही उत्साह से उन्हें हिंदी की वर्णमाला सिखाई? कितने माता-पिता अपने छोटे बच्चों के साथ बैठकर "अ से अनार, आ से आम" पढ़ते हैं? कितने बच्चों को बचपन में हिंदी की कविताएँ, कहानियाँ और लोकगीत सुनाए जाते हैं?

हमारे घरों में दादी-नानी की कहानियाँ, लोकगीत और मुहावरे कभी हमारी भाषा की पहचान हुआ करते थे। आज कई बच्चों को अपनी ही भाषा के सरल शब्दों का अर्थ समझाने की ज़रूरत पड़ती है। अगर कोई व्यक्ति बच्चों के सामने हिंदी में कोई संख्या बोल दे, तो हमारे बच्चे उसे आसानी से समझ नहीं पाते। फिर हमें वही संख्या अंग्रेज़ी में बताकर उन्हें समझानी पड़ती है। यह सचमुच बहुत दुखद है कि अपनी ही भाषा में गिनी गई संख्या को समझाने के लिए हमें दूसरी भाषा का सहारा लेना पड़ता है। हमें यह सोचने की जरूरत है कि कहीं आधुनिक बनने की कोशिश में हम अपनी जड़ों से तो दूर नहीं होते जा रहे?

हिंदी को आगे बढ़ाने का मतलब अंग्रेज़ी का विरोध करना नहीं है। दोनों भाषाएँ सीखना हमारे बच्चों के लिए फायदेमंद है। बल्कि जितनी अधिक भाषाएँ बच्चा सीखे, उतना ही उसका संसार बड़ा होता है। समस्या तब शुरू होती है जब हम एक भाषा को दूसरी से बेहतर मानने लगते हैं।

हिंदी दिवस पर हम हिंदी के महत्व पर भाषण देते हैं, कविताएँ पढ़ते हैं और सोशल मीडिया पर संदेश लिखते हैं। लेकिन क्या साल में एक दिन हिंदी को याद करना पर्याप्त है? अगर हिंदी सच में हमारी भाषा है, तो उसे हमारे रोज़मर्रा के जीवन में भी सम्मान मिलना चाहिए।

बच्चों से हिंदी में बात करना, उन्हें हिंदी की किताबें पढ़ाना, कविताएँ और कहानियाँ सुनाना, सही उच्चारण सिखाना और अपनी भाषा बोलने पर उन्हें प्रोत्साहित करना, ये छोटे-छोटे कदम हैं, लेकिन इनका असर बहुत बड़ा हो सकता है।

हमें अपने बच्चों को यह सिखाने की ज़रूरत है कि गलत अंग्रेज़ी बोलना सीखने की प्रक्रिया है और गलत हिंदी बोलना भी सीखने की प्रक्रिया ही है। किसी भाषा में गलती करने पर हँसने के बजाय उसे सुधारने में मदद करनी चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण बात है, जिस पर ध्यान देने और सुधार करने की आवश्यकता है, हम अपने पौराणिक पात्रों और ग्रंथों के नाम भी अक्सर अंग्रेज़ी की वर्तनी के अनुसार बोलने लगे हैं।

राम को राम ही कहें, रामा नहीं।
रावण को रावण ही कहें, रावणा नहीं।
रामायण को रामायण ही कहें, रामायणा नहीं।
महाभारत को महाभारत ही कहें, महाभारता नहीं।

ऐसे उदाहरणों की सूची बहुत लंबी है, लेकिन इस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें अपनी भाषा, उच्चारण और सांस्कृतिक विरासत को अंग्रेज़ी के प्रभाव में बदलने के बजाय उसके मूल स्वरूप और सही उच्चारण का सम्मान करना चाहिए।

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती। उसमें हमारी संस्कृति, हमारी यादें, हमारी भावनाएँ और हमारी पहचान बसती है।

इसलिए सवाल सिर्फ़ यह नहीं कि "हिंदी दिवस कब और कैसे मनाएँ?"

सवाल यह होना चाहिए - क्या हम हिंदी को अपने हर दिन का हिस्सा बना रहे हैं?"

कुमुद सिन्हा प्रियदर्शी

भारत के शास्त्रीय नृत्य

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ एवं चुस्त रहने के लिए व्यायाम हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कुछ लोग टहलना या दौड़ना पसंद करते हैं, कुछ जिम जाते हैं, योग करते हैं आदि। लेकिन क्या आप जानते हैं कि नृत्य भी व्यायाम का एक सुंदर रूप है? ज़ुम्बा और एरोबिक्स इसके कुछ उदाहरण हैं। इसी प्रकार हमारी भारतीय परंपरा में भी कई शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ हैं, जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में सहायक होती हैं।

क्या आप जानते हैं कि भारत में कितने शास्त्रीय नृत्य रूप हैं? वे एक-दूसरे से किस प्रकार अलग हैं? प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य के अलग-अलग नृत्य-आंदोलन और मुद्राएँ हमारे शरीर और मन के लिए किस प्रकार लाभदायक हैं?

तो आइए, भारतीय शास्त्रीय नृत्य की आठ अलग-अलग शैलियों के बारे में संक्षेप में जानने के लिए इस यात्रा पर चलते हैं।

1. भरतनाट्यम

मैं इस यात्रा की शुरुआत उस नृत्य शैली से करना चाहूँगी, जिसे मैं बचपन से सीखती आ रही हूँ और पिछले 32 वर्षों से सिखा भी रही हूँ।
भरतनाट्यम भारत की सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है। इसका संबंध मुख्य रूप से दक्षिण भारत से है और यह विशेष रूप से तंजावुर, मदुरै तथा कर्नाटक के कुछ भागों में प्रचलित रहा है।
प्राचीन समय में दक्षिण भारत के मंदिरों में देवदासियों द्वारा इसका अभ्यास एवं प्रदर्शन किया जाता था। आज के समय में भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में अनेक विद्यार्थी भरतनाट्यम सीखते हैं।
भरतनाट्यम की विभिन्न रचनाएँ और प्रस्तुतियाँ मूल अडवु पर आधारित होती हैं जिसे "आयता मंडलम्" पोस्चर मैं किया जाता है।
भरतनाट्यम को मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया जाता है—नृत्त, नृत्य और नाट्य। इसमें सुंदर हस्त-मुद्राओं का भी प्रयोग होता है, जिन्हें संयुक्त हस्त और असंयुक्त हस्त मुद्राएँ कहा जाता है।

भरतनाट्यम की प्रस्तुतियों में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओं के गीतों का प्रयोग किया जाता है।
यह नृत्य कर्नाटक संगीत पर आधारित है। जीवंत प्रस्तुतियों में मृदंगम, वायलिन, बाँसुरी, वीणा और घटम जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

अब आइए, भारत की अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों के बारे में कुछ पंक्तियों में जानते हैं।

2. कथक

कथक उत्तर भारत से उत्पन्न एक प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली है। इसकी तीन प्रमुख घराने हैं—जयपुर, लखनऊ और बनारस।
"कथाकार" शब्द से ही कथक नाम की उत्पत्ति मानी जाती है। कथक में कहानी कहने की परंपरा, भाव-अभिनय, पदचालन और लयकारी का विशेष महत्व है।

3. कथकली

कथकली केरल राज्य की प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाट्य शैली है। इसमें देवताओं और राक्षसों की कथाओं को नृत्य और नाट्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें नृत्य और अभिनय का सुंदर समन्वय होता है।अभिनय मुख्य रूप से चेहरे की मांसपेशियों और आँखों की विभिन्न गतियों के माध्यम से किया जाता है।
कथकली कलाकार का श्रृंगार अत्यंत विशेष होता है और इसमें लगभग 6 घंटे तक का समय लग सकता है। चेहरे पर विभिन्न रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो नृत्य में अलग-अलग रस और भावों को दर्शाते हैं।

4. कुचिपुड़ी

कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य शैली है।
इसमें विभिन्न प्रकार की नृत्त हस्त-मुद्राओं का प्रयोग किया जाता है। इस नृत्य में मुख्य रूप से तेलुगु भाषा का प्रयोग होता है।

5. मोहिनीअट्टम

मोहिनीअट्टम केरल राज्य की एक अत्यंत मनमोहक और आकर्षक शास्त्रीय नृत्य शैली है। इसे सौंदर्य और मोहकता के दिव्य स्वरूप के रूप में देखा जाता है।
"मोहिनी" भगवान विष्णु के मोहिनी रूप से जुड़ी हुई है और यह नृत्य भगवान विष्णु के इसी दिव्य रूप से संबंधित माना जाता है।

6. ओडिसी

ओडिसी की उत्पत्ति ओडिशा के हिंदू मंदिरों से हुई है। ओडिसी नृत्य की दो प्रमुख पारंपरिक शैलियाँ "महारी" और "गोतीपुआ" हैं।

इस नृत्य का प्रसिद्ध प्रदर्शन ओडिशा के पुरी स्थित प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर की परंपराओं से भी जुड़ा हुआ है।

7. मणिपुरी

मणिपुरी नृत्य, जिसे "जागोई" के नाम से भी जाना जाता है, मणिपुर की एक अत्यंत सुंदर, कोमल, भावपूर्ण और लयात्मक नृत्य शैली है।

इसमें शरीर की गतियाँ बहुत ही प्रवाहपूर्ण और सहज होती हैं। यह नृत्य भक्ति और दिव्य प्रेम की भावना से जुड़ा हुआ है तथा भगवान कृष्ण और राधा की कथाओं को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करता है।

8. सत्रिया

सत्रिया नृत्य असम राज्य की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैली है। इसमें रामायण, महाभारत और भगवान कृष्ण से संबंधित विभिन्न कथाओं को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

नृत्य और हमारा स्वास्थ्य - शास्त्रीय नृत्य केवल हमारे शरीर को आकार देने और उसे स्वस्थ रखने में ही सहायक नहीं होता, बल्कि प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य की रचनाओं में समाहित सुकून देने वाला संगीत हमारे मन को भी शांत और प्रसन्न करता है।
नृत्य के माध्यम से हम शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ मानसिक शांति, एकाग्रता, संतुलन और आत्म-अभिव्यक्ति का भी अनुभव कर सकते हैं।

पल्लवी मेहेंदले

लघु कथाएँ

खाली

हिंदी—मेरी पहचान

राहुल एक छोटे शहर से आया था। बचपन से ही उसे हिंदी बोलना बहुत पसंद था। उसकी दादी उसे हिंदी में कहानियाँ सुनातीं और कहतीं, "बेटा, अपनी भाषा को कभी छोटा मत समझना। भाषा केवल शब्द नहीं होती, यह हमारी पहचान होती है।"

लेकिन बड़े शहर के एक अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में आने के बाद राहुल को अपनी हिंदी बोलने में शर्म आने लगी। उसके कुछ दोस्त हिंदी बोलने पर उसका मज़ाक उड़ाते थे।

एक दिन स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई। सभी बच्चों को हिंदी में कहानी लिखनी थी। राहुल ने भी भाग लेने का फैसला किया।

उसने अपनी दादी की कही बातों को याद करते हुए लिखा–

"जिस भाषा में माँ ने पहली बार मुझे पुकारा, जिस भाषा में दादी ने मुझे लोरी सुनाई और जिस भाषा में मैंने अपने सपने देखना सीखा, उस भाषा से मैं कैसे शर्मिंदा हो सकता हूँ?"

प्रतियोगिता के दिन राहुल की कहानी पूरे विद्यालय में पढ़ी गई। सभागार तालियों से गूँज उठा। हिंदी की शिक्षिका ने मुस्कुराते हुए कहा, "राहुल, आज तुमने हमें केवल एक कहानी नहीं सुनाई, बल्कि अपनी पहचान से प्यार करना सिखाया है।"

राहुल की आँखों में खुशी के आँसू थे। उसे समझ आ गया था कि दूसरी भाषाएँ सीखना हमारी ताकत है, लेकिन अपनी मातृभाषा का सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी।

उस दिन से राहुल गर्व से हिंदी बोलने लगा।

क्योंकि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, हमारे दिल की आवाज़ और हमारी पहचान है।

प्रियम चक्रवर्ती

खाली

वीवुमेन

वीवुमेन महिलाओं द्वारा संचालित व्यवसायों के लिए एक सुरक्षित विकास पारिस्थितिकी तंत्र है और एक जीवंत समुदाय है जो महिलाओं को सीखने, जुड़ने, सहयोग करने और विकसित होने के लिए एक साथ लाता है। **२०१४ में स्थापित**, वीवुमेन विविध पृष्ठभूमि, पेशों और उद्योगों की महिलाओं के मजबूत नेटवर्क में विकसित हो गया है, जो ज्ञान-साझा करने, नेटवर्किंग और आपसी समर्थन के सार्थक अवसर पैदा करता है।

वर्कशॉप, नेटवर्किंग मीट्स, बिजनेस शावर, सामुदायिक पहल, कौशल निर्माण सत्र और महिलाओं-केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से, वीवुमेन एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ महिलाएं अपने काम का प्रदर्शन कर सकती हैं, विचारों का आदान-प्रदान कर सकती हैं, नए अवसर खोज सकती हैं और मूल्यवान पेशेवर संबंध बना सकती हैं।

वीवुमेन के मूल में यह विश्वास है कि जब विकास साझा किया जाता है तो यह अधिक सार्थक हो जाता है। यह समुदाय महिलाओं को एक-दूसरे को समर्थन देने, एक-दूसरे की उपलब्धियों का जश्न मनाने और ऐसे सहयोग बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है जो व्यवसाय से परे जाते हैं।

सालों के दौरान, वीवुमेन ने **२९०+ कार्यशालाओं, ७०+ नेटवर्किंग मीटिंग को १०+ शहरों में आयोजित किया है, और ५०+ बिजनेस शावर** किए हैं, साथ ही हजारों महिलाओं को कौशल, दृश्यता और संपर्क बनाने में मदद की है। दिल्ली एनसीआर, मुंबई, पुणे, जयपुर, इंदौर, जबलपुर, कोलकाता और बेंगलुरु सहित शहरों में बढ़ती उपस्थिति के साथ, यह समुदाय अपनी पहुंच का विस्तार करना जारी रखता है।

वीवुमेन सिर्फ एक नेटवर्क नहीं है—यह एक ऐसा स्थान है जहाँ विचार अवसरों से मिलते हैं, व्यवसाय लोगों से मिलते हैं, और महिलाएं एक ऐसे समुदाय को पाती हैं जो उनकी क्षमता पर विश्वास करता है।

२०२६

पिछली मुलाकातें

पिछली मुलाकातें

Celebrating

Eco System Enablers
WeWomen Indore
Our Special Guest

कार्यशाला फाउंडेशन

कार्यशाला फाउंडेशन एक गैर-लाभकारी संगठन है जो शिक्षा, कौशल विकास, वित्तीय जागरूकता, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामुदायिक विकास पर केंद्रित पहलों के माध्यम से समाज में सार्थक और सतत बदलाव लाने की दिशा में काम कर रहा है। २०१९ में स्थापित, फाउंडेशन का मानना है कि स्थायी सामाजिक बदलाव व्यक्तियों को सशक्त बनाने और समुदायों को मजबूत करने से शुरू होता है।

कार्यशाला फाउंडेशन का एक मुख्य ध्यान शिक्षा और सीखने पर है, जिसमें ऐसे कार्यक्रम शामिल हैं जो बच्चों और उन समुदायों के लिए ज्ञान और संसाधनों को अधिक सुलभ बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता है। शैक्षिक गतिविधियों, पुस्तक और सीखने के संसाधन अभियान, सामुदायिक संवाद और स्थलीय पहल के माध्यम से, फाउंडेशन सीखने और अवसर की संस्कृति को प्रोत्साहित करने का काम करता है।

फॉउंडेशन महिलाओं के सशक्तिकरण और कौशल विकास की दिशा में भी कार्य करता है, महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और वित्तीय जागरूकता के अवसर खोजने में मदद करता है। इसके प्रयास वित्तीय साक्षरता, स्वास्थ्य और कल्याण, पर्यावरण जागरूकता, बच्चों की शिक्षा, सीएसआर पहलों, पोश और विविधता एवं समावेशन जैसे क्षेत्रों तक विस्तारित होते हैं, जो व्यक्तिगत और सामुदायिक कल्याण के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करते हैं।

कार्यशाला फाउंडेशन मानता है कि सार्थक प्रभाव केवल बड़े पहलों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर निरंतर प्रयासों के जरिए भी पैदा होता है। स्वयंसेवकों, संगठनों, पेशेवरों और समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाकर, यह लोगों को उनके समय, ज्ञान और संसाधनों का योगदान उन कारणों में करने के अवसर प्रदान करता है जो महत्वपूर्ण हैं।

बच्चों की शिक्षा और सामुदायिक शिक्षा का समर्थन करने से लेकर जागरूकता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने तक, कार्यशाला फाउंडेशन ऐसे समुदायों का निर्माण करने की दिशा में काम करता रहता है जो अधिक जागरूक, सक्षम, समावेशी और सशक्त हों।

अपने मूल में, कार्यशाला फाउंडेशन एक सरल लेकिन शक्तिशाली विश्वास के लिए खड़ा है: जब ज्ञान, अवसर और करुणा एक साथ आते हैं, तो वे स्थायी परिवर्तन पैदा कर सकते हैं।

खाली

कृतज्ञता

हर रचना के पीछे एक रचनाकार होता है,
हर प्रयास के पीछे कई हाथ,
और हर खूबसूरत सफ़र के पीछे
अनगिनत लोगों का विश्वास।

शब्द समर्पण केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि उन भावनाओं, विचारों और रचनात्मक आवाज़ों का एक साझा सफ़र है, जिन्होंने इस पत्रिका को अपना बनाया। इस सफ़र में योगदान देने वाले प्रत्येक रचनाकार, लेखक, कवि और प्रतिभागी के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस मंच पर अपने विचार, संवेदनाएँ और कल्पनाएँ साझा कीं—और इन्हीं शब्दों ने इस संग्रह को उसकी आत्मा दी।

हम उन सभी लोगों के भी आभारी हैं जिन्होंने इस पहल पर विश्वास किया, इसे अपना समय दिया, इसे प्रोत्साहित किया और इसके निर्माण में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान दिया। आपकी सहभागिता और विश्वास ने इस प्रयास को आगे बढ़ने की शक्ति दी।

विशेष आभार उन सभी सहयोगियों और शुभचिंतकों का, जिन्होंने हिंदी भाषा, साहित्य और अभिव्यक्ति के इस प्रयास को अपना समर्थन दिया। आपके सहयोग ने हमें यह विश्वास दिलाया कि शब्द आज भी लोगों को जोड़ने, भावनाएँ जगाने और विचारों को नई दिशा देने की ताकत रखते हैं।

यह पत्रिका आज हमारे हाथों में है, लेकिन इसकी असली खूबसूरती उन सभी लोगों में है जिन्होंने इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हर शब्द के लिए धन्यवाद।
हर भावना के लिए धन्यवाद।
इस सफ़र का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद।

आशा है कि शब्द समर्पण के ये शब्द आपके मन तक पहुँचें,
और शायद किसी नए शब्द, नई रचना या नई कहानी को जन्म दें।

आपका साथ ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

सोशल मीडिया

फेसबुक:

www.facebook.com/KaryashalaFoundation

www.facebook.com/groups/wewomen1

इंस्टाग्राम:

www.instagram.com/karyashala_fdn

www.instagram.com/wewomen_group

www.instagram.com/wewomen_welead

www.instagram.com/wewomen_justblogit

फॉलो और टैग जरूर करें

खाली

हिंदी दिवस स्पेशल डिजिटल कलेक्शन
कार्यशाला फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित
14 सितंबर 2026 को प्रकाशित